सक्सेस स्टोरी

सुरभि इको क्लब-शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय-बसना

जिला-महासमुंद ,छत्तीसगढ़

....

हमारे विद्यालय में यह संस्था सन 2002 में आरम्भ हुई तब से यह अब तक लगातार पर्यावरणीय गतिविधियों का सञ्चालन अपने विद्यालय में कर रही है.ऐसा करते हुए हमने अपनी स्थानीय समस्याओं को पहचाना और उस पर अपनी गतिविधियों को फोकस किया यद्यपि इसमें पंजीकृत 50 विद्यार्थी होते हैं लेकिन हमने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को इसमें सहभागी बनाया तथा अनेक स्कंधों/संगठनों के सहयोग से हमने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी है. इस यात्रा के दौरान हमें कुछ पुरस्कार प्राप्त होते रहे जो हमें प्रोत्साहित करते रहे इनमें से कुछ इस प्रकार हैं- गहिरा गुरुजी पुरुस्कार,कुंवर युद्धवीर सिंह पुरस्कार एवं पर्यावरण मित्र पुरस्कार.इस दौरान राज्य स्तर पर होने वाली इको बाल मेला का आयोजन हमें आक्सीजन देते रहा इसमें भी अपनी संस्था अग्रणी रही है .हमारी कुछ विशिष्ट गतिविधियाँ इस प्रकार रही है जिसे प्रशंसा मिली-

1 अस्थायी चेक डैम का निर्माण-

यह प्रयोग हमने 2002 में पहली बार सफल रूप से करके ग्रामीणों को दिखाया उसके बाद से अब वे स्वयं इसे अपनाने लगे हैं . पेयजल के संरक्षण के लिए स्थानीय नदी-नालों में सीमेंट की बोरियों में रेत भरकर पानी के बहाव को कुछ दिनों तक रोक के रखने से वहाँ के भू जल स्रोत में बढ़ोत्तरी हुई और इस एकत्रित जल का उपयोग रबी फसल,निस्तारी एवं सब्जियों के उत्पादन में हुआ. ग्राम कुड़ेकेल एवं ग्राम जमडी में हमने इसे ग्रामीणों एवं रा.से.यो.की सहायता से किया.

2 करील के विरुद्ध अभियान-

नवांकुरित बाँस को काटकर करील बनाया जाता है यह एक प्रकार से बाँस की भ्रूण हत्या है.बाज़ारों में खुलेआम बिकने वाला करील लोगों की सामाजिक कार्यक्रमों में एक प्रमुख सब्जी का है. समस्या इसमें यह है कि-इसका कोई पोषक मूल्य नहीं है, स्थानीय वन सम्पदा को (चोरी से)नुकसान पहुँचता है एवं यह भ्रूण जो एक परिपूर्ण बाँस बनकर ग्रामीणों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनती जिसके अभाव में वे बेरोजगार हो गए.इस बाँस की कमी से इसके स्थानीय घरेलु उत्पादों का स्थान प्लास्टिक ने ले लिया. हमने इसके विरुद्ध विद्यार्थियों के साथ जनजागरण करते हुए उनके घरों तक पहुँचे और इसके उपयोग में कमी आयी .इस अभियान में विविध स्पर्धाएँ,रैली,गोष्ठी का आयोजन किया,अपील के फ्लायर्स वितरित किए.इन दिनों नकली करील बिकने लगे हैं . यह हमारे लिए कुछ समाज से सीधे ही भिड़ने जैसा रहा क्योंकि करील उनकी परम्पराओं में शामिल है.

3 झोला बैंक की स्थापना-

'प्लास्टिक को ना कहें'से उत्साहित होकर और अपने विद्यालयीन छात्रों को इन्हीं प्लास्टिक बैग्स में पुस्तकें लाते देखकर विचार आया कि झोला बैंक होना चाहिए. यह झोला परंपरागत ना होकर पिट्ठू बैग होता है जो मुख्यतः उनके प्लास्टिक बैग्स को रिप्लेस करता है.इसके लिए हमने अपने स्टाफ के साथियों और शहर के घरों से पुरानी जींस पेंट इकट्ठा किया,विद्यार्थियों ने स्वयं इसकी सिलाई की-कुछ ने स्थानीय दर्जियों से सिलाया,स्पर्धा हुआ लोग सम्मानित हुए और बड़ी मात्रा में हमने दो सत्र तक अपने विद्यालय में प्लास्टिक थैले को आने रोके रखा.

4 पेयजल बचाने का तकनीकी समाधान-

पेयजल की कमी और इसे बचाने की सुध अक्सर हम लोग गर्मियों के मौसम में करते हैं ठीक इसी समय हमारी समस्या है -कूलर के लिए पानी जुटाना. हमने अटल टिंकरिंग लैब [नीति आयोग-भारत शासन के द्वारा स्थापित लैब] के सहयोग से एक प्रोटोटाइप बनाया 'SAVO' जो राष्ट्रीय स्पर्धा में टॉप 12 में रहा इसकी प्रशंसा मिली.लोगों को जागरूक कर सके,राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली में नोबेल विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी के समक्ष प्रस्तुति दी.अब इसके उपयोग से कूलरों में पानी की खपत कम हुई है.

5 पैरा/पराली के विरुद्ध अभियान-

पैरा हमारे कृषि अपशिष्ट हैं जो हमारे गो वंश की कमी के चलते अनुपयोगी होकर हमारी समस्या बने हुए हैं स्थानीय समाधान के लिए हमने केंद्र शासन को सुझाव दिया कि इसका उपयोग यदि हम फुटू/मशरूमके उत्पादन में करते हैं तो इससे आम लोगों को कम दाम पर पर्याप्त पोषण मिलेगा,रोजगार बढ़ेगा और पैरा के निपटारे का समाधान होगा.इसकी प्रशंसा मिली कई आयोजन इससे सम्बंधित हमने किया अब लोग स्थानीय स्तर पर इसका उत्पादन करने लगे हैं.पैरा का यूरिया उपचार कर पशुओं को खिलाने की विधि बतायी इससे दूध उत्पादन में वृद्धि हुई.वर्तमान में महासमुंद जिला ,राज्य के सर्वाधिक दूध उत्पादन वाला जिला है.

पौधा रोपण-संरक्षण से हमारा विद्यालय अब एक आक्सीज़ोन में बदल गया है,अब यह प्लास्टिक फ्री कैम्पस है.इसके अलावा हमारी सभी नियमित गतिविधियाँ यथा तिथियों को संचालित होते रहती है.इन सभी गतिविधियों में आवश्यकतानुसार विविध स्कंधों/संगठनों का सहयोग लेते हैं.

रमेश कुमार सोनी

प्रभारी शिक्षक-इको क्लब